कैसे बनें कंटेंट राइटर और क्या होगी सैलरी

हर कंपनी के पास एक ऐसी टीम होती है। जो कंपनी का सोशल मीडिया, ब्लॉग्स और वेबसाइट आदि को मैनेज करती है। ऐसे में आप भी इस क्षेत्र में अपनी स्किल्स को बढ़ाकर अपने कॅरियर की शुरूआत कर सकते हैं।

आज के दौर में हर कोई सोशल मीडिया का इस्तेमाल जमकर कर रहा है। वहीं आपने भी देखा होगा कि छोटी-बड़ी कंपनियों के भी सोशल मीडिया पर प्रोफाइल बने हैं, जिन पर हर रोज कुछ न कुछ अपडेट आता रहता है। सोशल मीडिया एप पर आप कंपनियों के बारे में विस्तृत जानकारी ले सकते हैं। आज के समय में कंपनी के यू-ट्यूब अकाउंट, ट्विटर, इंट्राग्राम, टेलीग्राम समेत तमाम पेजों को नियमित तौर पर मैनेज किया जाता है। हालांकि जब पहले सोशल मीडिया का जमाना नहीं था, तब कंपनी की पहचान सीमित हुआ करती थी। लेकिन सोशल मीडिया के इस दौर में हर कंपनी की अपनी पहचान लोकल से ग्लोबल तक है। इन सबमें कंटेंट राइटिंग का रोल सबसे ज्यादा अहम होता है। दरअसल, कंपनी को लोकल से ग्लोबल तक पहुंचाने में कंटेंट राइटिंग का रोल महत्वपूर्ण है, जिसके लिए हर कंपनी के पास एक ऐसी टीम होती है। जो कंपनी का सोशल मीडिया, ब्लॉग्स और वेबसाइट आदि को मैनेज करती है। इस हिसाब से देखा जाए, तो टीम में कंटेंट राइटर का पद सबसे ज्यादा अहम होता है।

बता दें कि कंटेंट राइटर कंपनी की पहचान, उसके प्रोडक्ट और कंपनी के बारे में जो लिखता है। उसी के आधार पर कंपनी मार्केट में ब्रांड बनकर उभरती है। यदि आप किसी कंपनी के बारे में अच्छे से जानना चाहते हैं, तो सोशल मीडिया या वेबसाइट पर उपलब्ध कराए जा रहे कंपनी द्वारा कंटेंट से तय होता है। इसके अलावा कंपनियां कंपनी के बारे में ई बुक, कंपनियों की वार्षिक विवरण पुस्तिका, प्रोडक्ट का यूजर मैनुअल या दीक्षांत समारोह का न्यूज लेटर आदि सब कंटेंट राइटर की तैयार करते हैं।

वर्तमान समय में तमाम वेबसाइट्स कंटेंट राइटर्स को मोटी पगार पर हायर करती हैं। यही कारण है कि 12वीं और ग्रेजुएशन पास अभ्यर्थी कंटेंट राइटिंग कर लाखों रुपए कमा रहे हैं। इसी वजह से लोग इसको एक प्रोफेशन को देख रहे हैं। ऐसे में इस फील्ड में आगे बढ़ने की तमाम संभावनाएं हैं। ऐसे में आप भी कंटेंट राइटिंग का कोर्स कर अपने सपने को साकार कर सकते हैं।

सैलरी

शुरूआत में एक कंटेंट राइटर के तौर पर कंपनी आपको सालान 2-3 लाख रुपए अदा करती हैं। वहीं समय के साथ अनुभव बढ़ने पर कंटेंट राइटर को सालान 4-5 लाख तक का पैकेज आसानी से मिल जाता है। बता दें कि आमतौर पर एक कंटेंट राइटर को 20 हजार से लेकर 35 हजार रुपए प्रतिमाह सैलरी मिलती है।

ऐसे बनाएं कॅरिअर

अगर आप भी प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी कर रहे हैं, तो अभ्यर्थी डिजिटल मार्केटिंग, ग्रॉफिक्स डिजाइनिंग जैसे फील्ड में अपना कॅरियर बना सकते हैं। अभ्यर्थी घर बैठकर कई टेक्निकल कोर्सेस के साथ अन्य प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी कर सकते हैं।

आर्टिस्टिक होने के साथ लॉजिकल थिंकर होते हैं प्रोडक्ट डिजाइनर्स

स्मार्टफोन, इलेक्ट्रॉनिक आइटम्स, बच्चों के खिलौने से लेकर ड्राइंग रूम के स्टाइलिश व स्मार्ट फर्नीचर्स तक आज जहां भी नजर दौड़ाए, टेक्नोलॉजी इनोवेशंस की एक से बढ़कर एक मिसालें देखने को मिल जाती है। फरि चाहे वह कोई गैजेट हो, डिजाइनर वॉच या होम अप्लायंस। ऐसे में कई बार सोचने में आता है कि इन्हें डिजाइन कौन करता है, इनका क्रिएटर ये काम प्रोडक्ट डिजाइर्स करते हैं जो कि इमेजिनेटिव पॉवर और एस्थेटिक सेंस की बदौलत टेक्टिनकल प्रोडक्ट्स बनाते हैं। इंजीनियरिंग का एडवांस ब्रांच है प्रोडक्ट डिजाइनिंग जिसमें इन दिनों युवाओं का अच्छा रुझान देखा जा रहा है।

वर्क प्रोफाइल

प्रोडक्ट डिजाइनर्स कमर्शियल मैन्युफैक्चरिंग फर्म्स के लिए आर्टिकल्स, प्रोडक्ट्स, मटीरियल्स डिजाइन करते हैं। कोई भी चीज डिजाइन करने से पहले ये उसकी विजुअल अपील और प्रैक्टिकल यूज का पूरा ध्यान रखते हैं। एक प्रोडक्ट डिजाइन को कार, होम अप्लायंस, कम्प्यूटर, मेडिकल इक्विपमेंट, ऑफिस या रिक्रिएशन इक्विपमेंट, खिलौने आदि कुछ भी डिजाइन करने पड़ सकते हैं। उन्हें मार्केट रिसर्चर्स, एडवरटाइजिंग टीम और प्रोडक्शन मैनेजस से इंटरेक्ट करने के अलावा ग्राफकि डिजाइनर्स के साथ काम करना होता है।

स्किल्स

प्रोडक्ट डिजाइनर को आर्टिस्टिक होने के साथ लॉजिकल थिंकर होना भी जरूरी है। आपके पास आउट ऑफ बॉक्स आइडियाज होंगे तो अलग पहचान बना सकेंगे। इसी तरह ऑब्जर्वेशन स्किल और विजुअल इमेजिनेशन बेहतरीन होनी चाहिए। आपको ड्राइंग के माध्यम से अपने आइडियाज को एक्सप्रेस करना, कंज्यूमर गुड्स के प्रोडक्शन और मार्केटिंग की समझ होनी चाहिए।

शैक्षणिक योग्यता

अगर आपके पास आर्किटेक्चर या इंजीनियरिंग में डिग्री होगी, तो आप आईआईटी से इंडस्ट्रीयल डिजाइनिंग में मास्टर्स कर सकते हैं। इससे करियर ग्रोथ अच्छी रहेगी। वैसे, साइंस स्ट्रीम से बारहवीं करने वाले नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ डिजाइन या आईआईटी से इंडस्ट्रियल डिजाइन का कोर्स कर, प्रोडक्ट डिजाइनिंग की फील्ड में आ सकते हैं।

मार्केट में अवसर

मैन्युफैक्चरिंग फर्म्स के डिजाइन डिपार्टमेंट में प्रोडक्ट डिजाइनर्स की अच्छी मांग होती है। आप इंडस्ट्रियल प्रोडक्ट डिजाइनर , वॉच डिजाइनर, फुटवियर डिजाइनर, डिजिटल डिजाइनर, आदि के रूप में करियर शुरू कर सकते हैं। इसके अलावा कंसल्टिंग फर्म्स में जॉब की जा सकती है।

प्रमुख संस्थान

- इंडस्ट्रियल डिजाइन सेंटर, आईआईटी बॉम्बे
- नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ डिजाइन, अहमदाबाद
- एमआईटी इंस्टीट्यूट ऑफ डिजाइन, पुणे
- सिम्बायोसिस इंस्टीट्यूट ऑफ डिजाइन, पुणे

आज जहां भी नजर दौड़ाए, टेक्नोलॉजी इनोवेशंस की एक से बढ़कर एक मिसालें देखने को मिल जाती है। फरि चाहे वह कोई गैजेट हो, डिजाइनर वॉच या होम अप्लायंस। ऐसे में कई बार सोचने में आता है कि इन्हें डिजाइन कौन करता है, इनका क्रिएटर ये काम प्रोडक्ट डिजाइर्स करते हैं जो कि इमेजिनेटिव पॉवर और एस्थेटिक सेंस की बदौलत टेक्टिनकल प्रोडक्ट्स बनाते हैं।

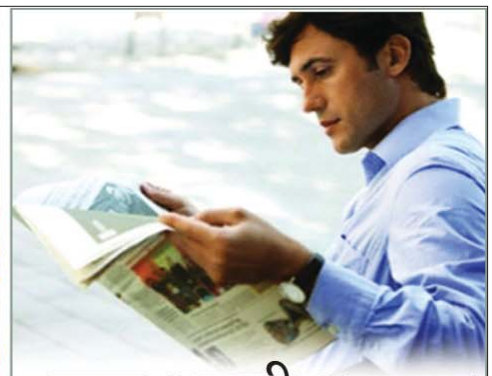

काम आएगी अखबार पढ़ने की आदत

अखबार पढ़ने की आदत बैंकिंग परीक्षा के करंट अफेयर्स सेक्शन तथा इंग्लिश सेक्शन दोनों ही में आपकी मदद करेगी। बैंकों में भर्ती के लिए होने वाली परीक्षा में यह परखा जाता है कि उम्मीदवार सीमित समय में समस्याओं को हल करने में कितना सक्षम है। इसमें न्यूनतम समय में उम्मीदवार की लॉजिकल रीजनिंग क्षमता तथा निर्णय क्षमता का आंकलन किया जाता है। साथ ही अपने आसपास की घटनाओं और अंगरेजी भाषा के ज्ञान की कसौटी पर भी उम्मीदवार को कसा जाता है। इसमें करंट अफेयर्स तो ऐसा विषय है, जिस पर आपकी पकड़ को रिटर्न टेस्ट ही नहीं, पर्सनल इंटरव्यू में भी जांचा जाता है।

पढ़ने की आदत पड़ती है

परीक्षा के लिहाज से, पढ़ने की आदत विकसित करना बहुत जरूरी है। इससे इंग्लिश लैंग्वेज पेपर को हल करने में बहुत मदद मिलती है। रीडिंग कॉम्प्रिहेंशन व पैसेज वाले हिस्से में अच्छे अंक लाने के लिए अच्छी रीडिंग स्किल जरूरी है। इसका अभ्यास करने के लिए अखबार एक अच्छा मंच है। आप अखबार में जो भी पढ़ें, उसका अर्थ अच्छी तरह समझें और उसे एक कागज पर लिख लें। यह भी देखें कि ऐसा आपने कितने समय में किया।

सेंटेंस फॉर्मेशन की जानकार

अंग्रेजी भाषा में लिखने का कोई तयशुदा फ्रेम नहीं है। इसमें वाक्य बिल्कुल सरल भी हो सकते हैं और बेहत जटिल भी। जो उम्मीदवार खुद को इंग्लिश में कमजोर महसूस करते हैं और इस भाषा को बस अभी-अभी समझने लगे हैं, उनके लिए इंग्लिश अखबार पढ़ना बहुत ही फायदेमंद रहेगा। अखबारों में काफी सरल वाक्य रचना होती है। इन्हें पढ़कर आप एक्टिव/ पैसिव वॉइस, वर्ब्स, ग्रामर, टेन्स आदि को बेहतर समझ सकते हैं।

राष्ट्रीय व अंतरराष्ट्रीय समाचार एकत्र करना

न्यूज एंड करंट अफेयर्स बैंकिंग एग्जाम्स का एक महत्वपूर्ण घटक है क्योंकि जनरल नॉलेज पेपर में राष्ट्रीय व अंतरराष्ट्रीय महत्व की ताजा घटनाओं से जुड़े प्रश्न पूछे जाते हैं। आपको चाहिए कि आप रोज अखबारों में महत्वपूर्ण न्यूज आइटम चिह्नित कर लें और फिर आने वाले दिनों में इनका फॉलो-अप लेते रहें। सबसे महत्वपूर्ण समाचारों को खास तौर पर नोट करें और परीक्षा की तैयारी करते हुए इन्हें रिवाइज करते रहें।

इंटरव्यू राउंड में करंट अफेयर्स का लाभ

समसामयिक घटनाक्रम से अवगत रहना इसलिए भी जरूरी है कि पर्सनल इंटरव्यू राउंड में इंटरव्यू पैनल इसके प्रति आपकी जागरूकता की परीक्षा ले सकता है। यदि आप नियमित रूप से अखबार पढ़ते रहे हैं, तो इन घटनाओं की जानकारी आपको मुंह-जुबानी याद होगी।

बढ़ता है आत्मविश्वास

रोज अखबार पढ़ने की आदत आपके आत्मविश्वास से भी भर देती है। आपको राजनीति, अर्थतंत्र, खेल आदि विषयों की जानकारी मिलती है। इससे आप रिटन एग्जाम, पर्सनल इंटरव्यू या ग्रुप डिस्कशन का सामना भी पूरे आत्मविश्वास के साथ कर सकते हैं। जानकारी होने पर आप स्पष्टता के साथ तथ्यों का विश्लेषण भी कर सकते हैं। बैंकिंग एग्जाम क्रैक करना साल-दर-साल मुश्किल होता जा रहा है। कारण यह कि सीमित संख्या के पदों के लिए आवेदन करने वालों की संख्या लगातार बढ़ रही है। इसकी तैयारी के लिए बहुत परिश्रम करना पड़ता है और ज्यादा से ज्यादा ज्ञान अर्जित करना पड़ता है। अखबार इस ज्ञान का बहुत ही अहम स्रोत साबित होते हैं और कई तरह से आपकी मदद करते हैं।

राजस्थान, महाराष्ट्र, मध्यप्रदेश, उत्तरप्रदेश, गुजरात, बिहार से लेकर दक्षिण के कई राज्यों की ऐतिहासिक इमारतें और धरोहरें हमेशा से घरेलू व विदेशी पर्यटकों को अपनी ओर खींचती रही हैं।ऐसे में इन धरोहरों को सहेजना, उनका संरक्षण करना जरूरी हो जाता है। यही जिम्मेदारी संभालते हैं कंजर्वेशन मैनेजमेंट स्पेशलिस्ट, जो स्मारकों, किलों, महलों, मंदिरों के अलावा बेशकीमती पांडुलिपियों, मूर्तियों, सिक्कों या वॉल पेंटिंग्स जैसे म्यूजियम ऑब्जेक्ट्स को सहेजकर रखते हैं।

हेरिटेज और कल्चरल टूरिज्म की रीढ़ है कंजर्वेशन मैनेजमेंट स्पेशलिस्ट

भारत की ऐतिहासिक और सांस्कृतिक विविधता बेमिसाल मानी जाती है। राजस्थान, महाराष्ट्र, मध्यप्रदेश, उत्तरप्रदेश, गुजरात, बिहार से लेकर दक्षिण के कई राज्यों की ऐतिहासिक इमारतें और धरोहरें हमेशा से घरेलू व विदेशी पर्यटकों को अपनी ओर खींचती रही हैं। अगर आपको भी ऐतिहासिक विरासतों के संरक्षण में दिलचस्पी है, तो म्यूजियोलॉजी या हेरिटेज मैनेजमेंट का कोर्स करने के बाद इस उभरते हुए क्षेत्र में करियर संवार सकते हैं।

जॉब स्कॉप

यूनेस्को की ओर से देश की 32 धरोहरों को वर्ल्ड हेरिटेज साइट्स का दर्जा मिला हुआ है। ये सभी देश के कल्चरल टूरिज्म के बड़े गंतव्य हैं लेकिन बेतरतीब शहरीकरण व व्यवसायीकरण से इन धरोहरों के अस्तित्व पर खतरा मंडराने लगा है। इनके रखरखाव की जरूरत महसूस की जाने लगी है, जो सिर्फ प्रशिक्षित और हुनरमंद हेरिटेज कंजर्वेटर ही कर सकते हैं। यही कारण है कि हाल के वर्षों में हेरिटेज कंजर्वेटर, आर्ट रिस्टोरर और म्यूजियोलॉजिस्ट जैसे पेशे का महत्व काफी बढ़ गया है। संग्रहालयों का भी सामाजिक और शैक्षणिक महत्व दिनो-दिन बढ़ता जा रहा है। देश में आर्ट म्यूजियम, आर्कियोलॉजिकल म्यूजियम, वैक्स म्यूजियम, विज्ञान/ तकनीक/ मैरिटाइम म्यूजियम तथा मिलेट्री व वॉर म्यूजियम के रूप में कई तरह के म्यूजियम्स संचालित हो रहे हैं, जिनमें हेरिटेज एक्सपर्ट्स की अच्छी डिमांड है।

करियर के अवसर

भारत में हेरिटेज मैनेजमेंट सेक्टर भले ही अभी नया है लेकिन इसमें जॉब के अवसर कम नहीं हैं। म्यूजियोलॉजी और हेरिटेज मैनेजमेंट प्रोफेशनल्स के लिए टीचिंग और रिसर्च वर्क के अलावा नेशनल/ स्टेट म्यूजियम्स, आर्कियोलॉजिकल म्यूजियम्स, आर्ट गैलरीज, कंजर्वेशन लैब्स, लाइब्रेरी, आर्काइव्स, आर्कियोलॉजिकल सर्वे ऑफ इंडिया, स्टेट डिपार्टमेंट ऑफ आर्कियोलॉजी, पर्यटन विभाग तथा एनजीओ में जॉब के ढेर सारे मौके हैं। ऐसे जानकारों की सेवाएं विदेश मंत्रालय की हिस्टोरियन डिविजन, शिक्षा मंत्रालय, भारतीय राष्ट्रीय अभिलेखागार, इंडियन काउंसिल ऑफ हिस्टोरिकल रिसर्च आदि में भी ली जाती हैं। यूनेस्को और यूनिसेफ जैसे अंतरराष्ट्रीय संगठनों में भी जॉब की अच्छी संभावनाएं हैं। म्यूजियोलॉजी या हेरिटेज मैनेजमेंट के विद्यार्थी वर्तमान में बड़ी संख्या में इंदिरा गांधी नेशनल सेंटर फॉर आर्ट एंड कल्चर, इंडियन नेशनल ट्रस्ट फॉर आर्ट, कल्चर एंड हेरिटेज तथा म्यूजियम्स में कंजर्वेटर, हेरिटेज मैनेजर, क्यूरेटर, प्रोजेक्ट को-ऑर्डिनेटर, रिसर्च एसोसिएट या आर्ट कंसल्टेंट जैसे पदों पर सेवाएं दे रहे हैं।

वर्क प्रोफाइल

म्यूजियोलॉजी यानी म्यूजियम से जुड़ा विज्ञान। इस कोर्स के अंतर्गत मुख्य रूप से म्यूजियम के प्रशासन तथा मैनेजमेंट से जुड़े पहलुओं का अध्ययन किया जाता है। पाठ्यक्रम के रूप में संग्रहालय विस्थापन, वैज्ञानिक/ कलात्मक/ ऐतिहासिक दृष्टि से महत्वपूर्ण वस्तुओं की देखभाल/ संरक्षण, कलाओं का प्रस्तुतिकरण, म्यूजियम कलेक्शन, डिजाइनिंग तथा डॉक्यूमेंटेशन आदि विषयों की जानकारी दी जाती है, जबकि हेरिटेज कंजर्वेशन एंड मैनेजमेंट कोर्स एक इंटर-डिसिप्लिनरी स्पेशलाइज्ड कोर्स है। इसके अध्ययन का दायरा दो हिस्सों में बंटा है- हेरिटेज कंजर्वेशन तथा हेरिटेज मैनेजमेंट। हेरिटेज कंजर्वेशन एक टेक्निकल फील्ड है। इसके अंतर्गत विभिन्न स्थलों की खुदाई में मिले म्यूजियम ऑब्जेक्ट्स यानी दुर्लभ पांडुलिपियों, मूर्तियों, पुराने सिक्कों या प्राचीन कलाकृतियों को नष्ट होने से बचाने की जानकारी दी जाती है। वहीं, हेरिटेज मैनेजमेंट पूरी तरह से एडमिनिस्ट्रेटिव व आर्किटेक्चरल फील्ड है, जिसमें स्मारकों के प्रबंधन, रखरखाव व साजसज्जा की जानकारी दी जाती है।

पर्सनल स्किल

हेरिटेज कंजर्वेशन बिल्कुल अलग तरह का कोर्स है। इसलिए इस क्षेत्र में वे ही युवा आएं, जिन्हें इतिहास, कला या सांस्कृतिक चीजों में रुचि हो क्योंकि बगैर रुचि और समर्पण के इस क्षेत्र में तरक्की कर पाना मुश्किल है। यदि प्रबंधन क्षेत्र से जुड़ना चाहते हैं, तो आर्किटेक्चरल स्किल, टेक्निकल स्किल के अलावा आपमें प्रशासनिक क्षमता, अच्छी ऑब्जर्वेशन स्किल और विश्लेषण की दक्षता भी होनी चाहिए।